JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

संरचनात्मक परिप्रेक्ष्य में मेहत्तर जाति कि भूमिका

नामः— राजेन्द्र राम
शाधे छात्र—समाजशास्त्र विभाग ल0 ना0 मिथला विश्वविद्यालय, दरभंगा
मोबाईल :— 7870620573
ईमेल :— www.rrajendra602@gmail.com

सारंश

सामाजिक सरंचनात्मक परिप्रेक्ष्य को बनाये रखन मे मेहतर जाति की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है। प्रत्येक मानव समूह मे अपनी परम्पराओं, जीवन शैली एवं क्रिया—कलापों के आधार पर एक विशिष्ट सस्कृति स्पष्ट रूप स परिलक्षित होती है। सामाजिक सरंचना मे मेहतर जाति का स्थान निम्नतम है, इसलिए मेहतर जाति की सांस्कृतिक, शैक्षणिक, आर्थिक और रहन—सहन एवं दशाओं का अध्ययन किया जाना आवश्यक है, ताकि समाज एवं राष्ट्र विकास की ओर अग्रसर हो। सामाजिक सरंचना को बनाए रखन मे मेहतर (भंगी) जाति के अभाव में एक स्वस्थ समृद्ध समाज एवं राष्ट्र की कल्पना करना एक कोरे कागज के समान है। माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मादी जी द्वारा स्वच्छता मिशन योजना को पुरा करने में मेहतर जाति की एक अहम भूमिका रही है।

महत्वपर्ण शब्दः— मेहतर जाति, भगी, अछुत, स्वच्छता, अनुसूचित जाति

परिचय

स्वाधिनता के बाद भारत के राष्ट्रपति के आदेश से सन् 1950 ई0 मे बिहार के 22 प्रमुख जातियो को अनुसूचित जाति के रूप मे अधिसूचित किया गया। अनुसूचित जाति की सचूी मे 10वें स्थान पर हाड़ी अथवा मेहतर या भंगी का उल्लखे किया गया है। मिथिलांचल में हाड़ी शब्द अधिक प्रचलित नही है। इस परिसर मे मेहतर या भंगी को हाड़ी के नाम स जाना जाता है। सामाजिक सरंचना मे मेहतर जाति का प्रकार्यात्मक महत्व है। महात्मा गाँधी ने कोलकत्ता के काँग्रेस अधिवेशन मे स्वच्छता तथा सफाई का दायित्व ग्रहण कर मेहतर की अछूत भूमिका अदा की थी। वर्त्तमान भारत सरकार के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उत्तर प्रदेश के हिन्दू धर्म के धर्म नगरी वाराणसी मे मेहतर की भूमिका अदा की थी। तथ्यों एवं आंकड़ो के आधार पर स्पष्ट होता है कि बिहार मे मेहतर जातियो के साथ इंसाफ नहीं हुआ है। अनुसूचित जातियों के विकास के

लिए राष्ट्रीय एवं प्रातीय स्तर पर विकास एवं कल्याण के लिए कतिपय कार्यक्रमो ंको सचांलित किया गया। लोकसभा विधान सभा तथा पंचायती राज व्यवस्था मे ंआरक्षण की व्यवस्था की गई। साथ ही शिक्षण सस्ंथान एवं रोजगार मे ंभी आरक्षण की व्यवस्था की गई। ताकि इसका समुचित विकास हो सके। बिहार मे ं2005 मे ंसत्ता परिवर्तन के बाद बिहार सरकार ने अनुसूचित जातियो ंके विकास एंव कल्याणकारी कार्यक्रमो ंका मूल्याकंन कराया। सकंट तथा समस्या स ेजूझ रहे अनुसूचित जातियों के परिवारों का 2007 मे ंमहादलित आयोग के गठन के जरिये एक नई दिशा देने का प्रयास किया गया। आयोग के द्वारा जागरूकता कार्यक्रम चलाए गये। बिहार के 22 अनुसूचित जातियों में स ेकेवल 18 अनुसूचित जातियो ंको ही महादलित की परिधी मे ंरखा गया। कुछ समय पश्चात् इन बचे 4 अनुसूचित जातियो ंको भी महादलित की परिधी मे ंरख लिया गया। सरकार के इस कदम स ेअनुसूचित जातियो ंमे ंवंचित वर्ग मेहतर का कितना विकास हुआ या नहीं हुआ जिसका अध्ययन करने की आवश्यकता है।

शक्ति सरंचना मे ंइस जाति का कोई विशेष स्थान नही ंहै नगर निगम, नगर पालिका, नगर परिषद एवं बड़ े निजी सस्ंथानों इत्यादि मे ं कार्यरत अधिकतर मेहतर सफाई कर्मियो ंको स्थायी नही ंकी गई ह ै इन्हें काम के अनुरूप मजदूरी नही ंमिलती मेहतर जाति मे ंअधिकतर परिवार आवास के बिना गंदी बस्तीयो,ं फुटपाथों तथा झोपड़ियों मे ंजिन्दगी गुजारते है। विभिन्न सगंठनो ं मे ंभी इन्हें समुचित स्थान प्राप्त नहीं है। अधिकतर सरकारी कल्याणकारी कार्यक्रमो ंस ेभी इन्हें कोई विशेष लाभ प्राप्त नही ंहुआ है। प्रशासनिक स्तर पर भी इनके साथ भेद–भाव हुआ है।

17 अप्रैल 2008 को दरभंगा प्रमण्डल के मेहतर जाति का एकत्रीकरण दरभंगा शहर मे ंहुआ था। आयोजित एक जातीय सगंठन के इस समाराहे मे ं तत्काल बिहार विधान सभा के अध्यक्ष उदय नारायण चाधैरी, बिहार के उप–मुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी, बिहार राज्य महादलित आयागे के सदस्य बबन रावत, आयोग के सदस्य राजेन्द्र नट तथा भारतीय जनता पार्टी के विधायक भगीरथी देवी मौजूद थे। सम्मेलन के आयोजकों ने उपयुक्त की उपस्थिति में अपनी जाति के विकास से सम्बन्धित ढ़रो सारे सवाल खड़ा किया था। मेहतर जाति के सम्बन्ध मे ंसमाजशास्त्रीयों के अनुसधंान तथा मूल्याकंन की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए उप–मुख्यमंत्री ने इनक ेविकास के लिए चरण–बद्ध कार्यक्रम का एलान सभा के समक्ष किया वर्त्तमान अध्ययन इसी दिशा में एक विनम्र प्रयास है।

डा0 शाम शास्त्री, प्रा0 रैप्सन, डा0 स्मिथ, डा0 रॉलिनसन, नैस्फाल्ड, सनोर्ट और कइ ं समाजशास्त्रीयों मे ंजाति स ेसम्बन्धित व्याख्यान मे ंमतभदे है। परन्तु यह यथार्थ है कि आज के परिवेश मे ंमनुष्य के प्रत्येक धर्म में जाति की व्यवस्था विद्यमान है। इसी आधार पर हिन्दू धर्म मे ंमेहतर जाति की उत्पत्ति से सम्बन्धित समाजशास्त्रीयो ंके विचारों मे ंभी मतभदे है। मेहतर जाति की उत्पत्ति का काल स्पष्ट रूप स ेकहीं नही ंमिलता। परन्तु हिन्द ूधर्म के अनुसार मेहतर जाति का ेशद्रू की संज्ञा दी गई है। मेहतर जाति की उत्पत्ति का समाजशास्त्रीय अध्ययन महत्वपूर्ण है। मेहतर जाति की एक विशिष्ट लोक संस्कृति है लोक देवता वेचुराम की अभ्यर्थना की जाती है मेहत्तर जाति मे ंकाली, गौडैया, मीरा तथा बंदी आदि लोक देवी–देवताओ ंका पूजन होता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन महत्वपूर्ण है।

धार्मिक आधार पर गात्रे के सदंर्भ मे ं महाभारत के शान्ति पर्व (296–17,18) मे ंवर्णन है कि मूल चार गात्रे है। (i)अगिरा (ii)कश्यप (iii)वशिष्ठ (iv)भृगु कुछ काल बितने के बाद आठ हो गया (v)जनदग्नि (vi)अत्रि (vii)विश्वमित्र (viii) अगस्त्य/ गात्रे की प्रमुखता उस काल मे ंबढ़ी जब जाति व्यवस्था कठारे हो गई उपयुक्त साक्ष्य के आधार

एवं साक्षात्कार और समाजशास्त्रीय अध्ययन पद्धति के आधार पर मेहतर जाति का अध्ययन की आवश्यकता है। मेहतर जाति मे ंविवाह एवं परिवार और नातेदारी की एक परम्परागत व्यवस्था है। अतः विवाह परिवार एवं नातेदारी के परिप्रेक्ष्य मे ंमेहतर जाती का अध्ययन किया जायगो। बाल विवाह का प्रचलन अभी भी जारी है तथा दहेज की समस्या मौजूद है। परम्परागत तौर पर मेहतर जाति मे ंअभी भी जाति सगंठन मौजूद है। क्रमशः सरदार, छड़िदार, टोला प्रमुख एवं समस्त टोला प्रमुख पाँच सलाहकार आदि की व्यवस्था मौजूद है। हाल के वर्षों 2008 मे ंमेहतर जातियो ंको लाम्बंद करने के लिए "मेहतर जाति जागरूकता सम्मेलन" का आयोजन दरभंगा जिला मे ं किया गया था। सम्मेलन मे ंदरभंगा, समस्तीपुर तथा मधुबनी के मेहतर का सहभाग हुआ था। इसके द्वारा लिए गये निर्णयों की समाजशास्त्रीय अध्ययन की आवश्यकता महत्वपूर्ण है।

शोध समस्या का उद्वेश्यः— प्रस्तावित शाधे "मेहतर जाति का समाजिक और आर्थिक स्थिति" के सदंर्भ मे ं

निम्नलिखित उद्वेश्य का ंनिर्धारित किए गए हैं :—

I. मेहतर जाति के सामाजिक स्थिति का पता लगाना।
II. शिक्षा जागरूकता तथा मेहतर जाति के बीच के संबंधों का ंपता लगाना।
III. मेहतर जाति के उत्थान के लिए सरकारी याजेनाओं और प्रयासों को अध्ययन करना।
IV. मेहतर जाति का आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
V. मेहतर जाति के सामाजिक वंचन, शाषेण एवं सामाजिक भेद—भाव का पता लगाना।

पूर्व अध्ययनों की समीक्षाः— किसी भी समाज एवं राष्ट्र के विकास मे ंमेहतर जाति की भी भूमिका होती है। 'मेहतर जाति समाज' समाज एवं राष्ट्र की (स्वच्छता के मामल ंमें) रीढ़ होती है। मेहतर जाति को सदियों तक शिक्षा, सस्कृति, आर्थिक इत्यादि विभिन्न क्रम काण्डों स ंवंचित किया गया। इसके विपरित यह जाति स्वच्छता कार्य के बल पर समाज एवं राष्ट्र को स्वच्छ बनाये रखन ंमे ंमहत्वपूर्ण भूमिका अदा करते चली आ रही है। शिक्षा एवं जानकारी के अभाव मे ंमेहतर जाति सरकारी कल्याणकारी कार्यक्रमों का लाभ नही ंल ंपा रहीं है।

ओम प्रकाश वाल्मिकी की पुस्तक "सफाई देवता" (2009) से पता चलता है कि समाज को स्वच्छ व रहने लायक बनाता है, उस ंकुत्ते बिल्लियो ंस ंभी नीचें गिना जाता है। वह निकृष्ट और त्याज्य है।, वही अत्यंज, अछूत, अस्पृश्य है। भंगी या मेहतर का नाम सुनते ही लोगों की भोहें तन जाती है। यह जाति हमेशा घारे उपेक्षा, शोषण, पीड़ा आदि के साथ जी रही है। यह समाज जितना दिमाग भंगीयों से नफरत करने मे ंलगाता है, उतना दिमाग स्वच्छता कैसे स्थापित की जाय मे ंनही ंलगाता है। अस्पृश्ता और जातिवाद को बनाए रखन ं की साजिस का ंउसने अपने सस्कारों का हिस्सा बना लिया है।

श्यामलाल की कृति "एक भंगी मेहतर कुलपति की अनकही कहानी" (2004) मे ंइन्होनें कहा है कि जब मैं जयपुर विश्वविद्यालय मे ंप्राफेसर था तो मेरे साथ भी छुआ—छूत सम्बन्धी व्यवहार हुआ है।

योगेन्द्र सिंह : (2006) American sociological Review (vol-30, oct 1965) मे ं प्रकाशित शाधे निबंध " Transformation of social, political and culture orders in modernization" मे ं स्पष्ट किया है कि दुनिया के विभिन्न हिस्सों मे ं आधुनिकीकरण पर जारेदार बहस चल रही है। इतना लम्बा समय बीत जाने के बाद आधुनिकीकरण के दौर मे ं मेहतर जाति पर भी आधुनिकीकरण का प्रभाव पड़ा है। बी0 आर0 अम्बेडकर की कृति "शूद्र कौन"? (1946) (1) शूद्र कौन थे (2) वे प्राचीन आर्यों के समाज का चौथा वर्ण क्यो ं और कैस ं बने। जो इस प्रकार हैः– (i)शूद्र आर्यों की जाति मे ं सर्यूवंशी है (ii)एक समय था जब आर्यों मे ं तीन ही वर्ण थे (iii) शूद्रों का पृथक वण र्न था (iv) शूद्र राजाओं और ब्राह्मणों मे ं निरंतर सघंर्ष चला और शूद्रो ं के विभत्स अतयाचार सहने पड़ ं (v) शूद्रो ं के दमन स ं अक्रातं ब्राह्मणों ने घृणावस शूद्रों का उपनयन बंद कर दिया (vi) उपनयन विराधे से शूद्रो ं का सामाजिक प्रभाव हुआ वे सामाजिक स्तर पर इतन ं पतीत हुये कि उन्हें वैश्यों से भी नीचे एक और वर्ण शूद्र बनाना पड़ा अजेष्ट त्रिपाठी : "कौन थे शूद्र" "क्या करत ं थे शूद्र"? 10 अगस्त (2017) लखे मे ं बताते है कि शद्रू गाँव से बाहर रहकर गाँव की रक्षा करत ं थे। किसानो की जमीन पर काम, गाँव की सीमा बताना, व्यापारियों को सुरक्षा देना, फसल और राज्य की खजानों की रक्षा करना, चारेी करने वालो ं की पता लगाना, गाँव मे ं आने–जाने वालों की पता लगाना, शूद्र लड़ाकू और कर्मठ जाति था, पेश ं से अगंरक्षक कर्मी थे, शूद्र समाज अस्पृश्य नहीं था। किसी पुराण मे ं भी शूद्रो ं के अछूत होन ं का प्रमाण नही ं है। शूद्रो ं की ख्याति हमेशा ईमानदार, मेहनती, प्रमाणिक और लठैत के तौर पर रही है। उज्जवल कृष्णन : "भारत की वंचित जाति" जून 17 (2019) स्वतंत्र पत्रकार अपने लखे मे ं लिखते है कि बेतिया के डामे–मेहतर जिन्दगी गुजारने के लिए बाँस की बिनाई और मानव मल की सफाई करते है। बेतिया के एक किशारे ने कहा अगर हम दलित अमीर बन भी जाते है, तो हमें अपनी जाति के कारण समाज द्वारा अक्सर नीच व्यवहार किया जाता है। दिवाकर शर्मा : "क्रांतिदूत" फरवरी 12, (2016) अपने लेख में निष्कर्ष निकाला कि मुगल काल मे ं मुगलों ने ब्राह्मणो ं और क्षत्रियो ं को दो रास्ते दिये। (i)इस्लाम कबुल करा ं (ii)मुसलमानों का मैला ढ़ाओं। जिन ब्राह्मण और क्षत्रिय ने मैला ढ़ाने की प्रथा को स्वीकार करने के उपरान्त अपने जनेऊ तोर दिया अर्थात उपनयन संस्कार का ं भगं कर दिया वा ं भंगी कहलाए। पुरूषातेम मीणा : "मेहतर जाति की मुक्ति कैस ं सभंव है" मार्च 16 (2013) नवभारत टाईम्स सपांदकीय लखे में लिखते है कि भारत मे ं एक अलिखित कानून बन गया है कि घरो ं दफतरो ं नालियों, सडको ं और अस्पतालां ं की गंदगी की सफाई के लिए भंगी जाति के लोगों ने ही जन्म लिया है। उपर्युक्त जगहो ं पर कार्य के बदले एन0 जी0 ओ0 द्वारा इन्हें उचित मजदूरी नही ं मिलती। जिस दिन यह जाति सामाजिक रूप स ं एक होकर एक निर्णय ल ं लगेा कि अब सफाई कार्य नही ं करेगें उसी क्षण इसके भाग्य का फैसला हो जायेगा। प्रभासाक्षी : न्यूज नेटवर्क अप्रैल 11 (2019) "जाति आधारित विभाजन और भेद–भाव के खिलाफ थे ज्योतिवा फूल" लेख में कहा गया है कि अछूताद्वार के लिए ज्योतिवा ने उनके अछूत बच्चां ं को अपने घर पर पाला और अपने घर की पानी की टंकी उसके लिए खोल दी। दलितों और निर्बल लोगो ं को न्याय दिलाने के लिए उन्होंने एक सस्ंथा (सत्यशाधेक समाज) स्थापित किया। बाल विवाह के विराधेी एवं विधवा विवाह के समर्थक थे 1888 में एक विशाल सभा मे ं इन्हें महात्मा की उपाधि दी।

श्री एम0 वेकैया नायडु : "सोशल एक्सक्लजून एण्ड जस्टिस इन इन्डिया" नवम्बर 17, (2017) मे ं कहा हि हम जानते है हमें क्या करना चाहिए हम नहीं कर रहे है। कार्य की कमी का सज्ञांन लेना चाहिए। वंचित लोगों तक पहुँचने के लिए सामाजिक समूहों उप–वर्गीकरण पर राष्ट्रीय बहस होन ं चाहिए। जाति, पंथ, धर्म और लिंग आधारित घोर असमानताएँ विद्यमान रहने की स्थिति मे ं भारत का विकास नही ं हा ं सकता।

निष्कर्षः—

मेहतर जाति की उत्पत्ति के सदंर्भ मे ंदूनिया के सभी समाजशास्त्रियों मे ं मतभदे है। मेहत्तर जाति हिन्दू वर्ण व्यवस्था के आधार पर शूद्र है। अर्थात निम्न। भारतीय सविधान के अन्तर्गत इस जाति के विकास एवं समता हतु अनको प्रावधान किए गये है जिसका लाभ भी यह जाति यदा—कदा ल`रहे है। इस जाति मे ंशिक्षा एवं जानकारी का अभाव है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :—

1. अम्बेडकर बी0 आर0 : "शूद्र कौन?"(1946) प्रकाशनः कंचन प्रकाशन, 30/14, गली नं0—8 विश्वासनगर, सहादरा, दिल्ली— 110032
2. कृष्णन उज्जवल : "भारत की वंचित जाति" जून 17, (2019) प्रकाशन : Net:- Hindi.Newclick.in
3. नायडु एव0 वेकैया : "सोशल एक्सक्लजून एण्ड जस्टिस इन इन्डिया" नवम्बर 17, (2017) प्रेस विज्ञप्ति : नई दिल्ली
4. प्रभासाक्षी : "जाति आधारित विभाजन के खिलाफ थ`जयोतिवा फूल" प्रकाशन : Net:- प्राभासाक्षी न्यूज नेटवर्क, अप्रैल 11, (2019)
5. मीणा पुरूषातेम : "मेहतर जाति की मुक्ति कैस`सभंव है"? प्रकाशन : Net:- डॉ0 पुरूषातेम मीणा 'निरंकुश'.in
6. वाल्मिकी ओम प्रकाशः "सफाई देवता" वर्ष (2009) प्रकाशन : राधा कृष्ण प्रकाशन प्रा0 ली0 7/31 अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली 11002
7. शर्मा दिवाकर : "क्रांतिदूत" फरवरी 12, (2016) प्रकाशन : Net:- www.krantidoot.in
8. सिंह योगेन्द्र : "भारतीय परम्परा का आधुनिकिकरण" वर्ष (2006) प्रकाशन : रावत पब्लिकेशन, जयपुर एवं नई दिल्ली
9. श्यामलाल : "एक भंगी कुलपति की अनकही कहानी" वर्ष (2004) प्रकाशन : मेसर्स युनिवरसीटी बुक हाउस, प्रा0 ली0 79 चौड़ा रास्ता, जयपुर—302003
10. त्रिपाठी अजेस्ठ : "कौन थे शूद्र"? "क्या करते थे शूद्र"? प्रकाशनः Net:- Theanalyst.co.in